

ग्राम/किलो बीज के हिसाब से उपचार करें।

### ग्रे-मोल्ड

इस रोग का कवक मृदा में उत्तरजीविता के रूप में रहता है। उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल के तराई क्षेत्रों में नम मौसम से तीव्र गति से फैलती हैं। पौधे के उपर धूसर फफूंद जैसी वृद्धि प्रमुख लक्षण है।

नियंत्रण उपचार हेतु देर से बोआई नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में करना चाहिए तथा फसल पर कैप्टान या डाइथेन एम.-45 का 0.3 प्रतिशत का छिड़काव करना चाहिए।

### स्क्लेरोटीनिया ब्लाइट

इसका प्रभाव पौधों के तने पर पड़ता है। रोगी पौधा पहले पीला और फिर भूरा होकर मर जाता है।

नियंत्रण : देर से बुआई करना, 3-4 वर्ष का फसल चक्र को अपनाकर खरीफ में धान को उगाना इसे रोकने में सहायक होता है। बीज बोने से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. 1 ग्राम + थायरम 75 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम प्रति किलो ग्राम की दर से उपचारित करना चाहिए।

### एस्कोकाइट्टा ब्लाइट

जड़ को छोड़कर सम्पूर्ण पौधा प्रभावित होता है। प्रारम्भिक अवस्था में जनवरी फरवरी माह में रोगी पौधों के तने, पत्तियों तथा फलों पर छोटे कृमि रंग के धब्बे उभर आते हैं जो बाद में पीले रंग के हो जाते हैं। इनके कारण पौधे धीरे-धीरे सूख जाते हैं।

नियंत्रण : एकीकृत प्रबन्धन हेतु स्वस्थ बीज का चुनाव एवं पूर्व बतायी विधि से बीज शोधन तथा 3-4 वर्ष में फसल चक्र अपनाना चाहिए। रोग रहित क्षेत्रों से प्राप्त बीज का प्रयोग करना चाहिए। रोग प्रतिरोधी प्रजातियाँ जैसे-सी.-235, गौरव आदि का चुनाव करना चाहिए।

### शीर्ष कलिका तोड़ना/खुटाई (निपिंग)

शीर्ष शाखायें तोड़ने की प्रक्रिया उस समय की जानी चाहिए जब पौधा 15-20 सेमी. की ऊँचाई के हो जाए। इस प्रक्रिया में पौधे की शीर्ष शाखायें तोड़ देने से पौधे की वानस्पतिक वृद्धि रुक जाती है तथा शाखायें अधिक फूटती हैं। अतः प्रति पौधा फूल व फलियों की संख्या बढ़ जाती है।

### कटाई एवं मड़ाई

जब 70-80 प्रतिशत फलियाँ पक जाएँ, फली से दाना निकालकर दांत से काटा जाए और कट की आवाज आए, तब समझना चाहिए कि चना की फसल कटाई के लिए तैयार है। काटी गयी फसल को एक स्थान पर इकट्ठा करके खलिहान में 4-5 दिनों तक सुखाकर मड़ाई की जाती है। सुखाने के पश्चात बैलों की दाँय चलाकर या श्रेसर द्वारा भूसा से दाना अलग कर लेते हैं।

### उपज

उन्नत विधि अपनाते हुए एवं अच्छी प्रजाति का चुनाव करके प्रति हेक्टेयर 15-20 क्विं. तक उपज प्राप्त की जा सकती है।

### भण्डारण

भण्डारण के समय दानों में नमी का प्रतिशत 10 से अधिक नहीं होना चाहिए। भण्डार गृह में 2 गोली एल्युमिनियम फास्फाइड/टन रखने से भण्डार कीटों से सुरक्षा मिलती है। भण्डारण के दौरान चने को अधिक नमी से बचाना चाहिए। राज्य/जिला/विकास खण्ड स्थित कृषि विभाग से संपर्क करें।

### अधिक उत्पादन लेने हेतु आवश्यक बिंदु

- मृदा में रोग एवं कीटों के प्रसुप्तावस्था में पड़े प्यूपा को नष्ट करने के लिये तीन वर्ष में एक बार ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करें।
- पोषक तत्वों की मात्रा मृदा परीक्षण के आधार पर ही दें।
- बीज का उपचार ट्राइकोडर्मा विरडी (6 ग्रा.) व कार्बोक्सिन (1 ग्रा.) प्रति कि.ग्रा. बीज के हिसाब से करें।
- उकठा रोग रोधी या सहनशील किस्मों जैसे जे.जी.-315, जे.जी.-12, जे.जी.-11, जाकी-9218, जे.जी.के.-1, जे.जी.के.-2, जे.जी.के.-3, इत्यादि को क्षेत्र विशेष की अनुकूलता अनुसार ही बोयें।
- फूल वाली अवस्था में खेत में T आकार की खूंटियाँ 50 प्रति हे. के हिसाब से लगाये व दाना पक्ते समय इनको निकाल दें।



- फेरोमेन ट्रेप्स का प्रयोग करें (12 प्रति हेक्टा.)।
- फसल जब 15-20 से.मी. ऊँचाई की हो जाये तो खुटाई करें।
- फसल में शाखाएँ बनते समय व फली बनते समय सिंचाई करें।
- बीज का उपचार अमोनियम मोलिब्डेट 1 ग्रा./कि.ग्रा. बीज के हिसाब से चना-सोयाबीन फसल प्रणाली वाले क्षेत्रों में करें।
- फसल में फूल आने के पहले की अवस्था में NSKE 5% या एजेडिराकिटन 0.03% (300 पी.पी.एम.) WSP की 2500-5000 ग्रा./हे. के हिसाब से 15 दिन के अन्तराल छिड़काव पर करें।
- जैविक कीट नियंत्रण हेतु NSKE (5%) का प्रयोग करें। द्वितीय स्त्रे NPV 250 एल.ई./तृतीय स्त्रे इंडोक्साकार्ब (1 मि.ली./ली. पानी)।
- पौध संरक्षण के लिये एकीकृत पौध संरक्षण के उपायों को अपनाना चाहिए।
- खरपतवार नियंत्रण अवश्य करें।
- तकनीकी जानकारी हेतु अपने जिले/नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र से संपर्क करें।
- भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा फसल उत्पादन (जुताई, खाद, बीज, सूक्ष्म पोषक तत्व, कीटनाशी, सिंचाई के साधनों), कृषि यन्त्रों, भण्डारण इत्यादि हेतु दी जाने वाली सुविधाओं/अनुदान सहायता/ लाभ की जानकारी हेतु संबंधित राज्य/जिला/ विकास खण्ड स्थित कृषि विभाग से संपर्क करें।

अधिक जानकारी हेतु देखें-

एम-किसान पोर्टल- <http://mkisan.gov.in/>

फार्मर पोर्टल- <http://farmer.gov.in/>

किसान कॉल सेन्टर- टोल-फ्री नं - 1800-180-1551

### लेखन एवं संपादन

डॉ ए. के. तिवारी  
डॉ ए. के. शिवहरे  
श्री विपिन कुमार

### तकनीकी सहयोग

डॉ. संदीप सिलावट  
श्री सतीश द्विवेदी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

निदेशक

भारत सरकार

दलहन विकास निदेशालय

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय  
कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग  
छठी मंजिल, विन्ध्याचल भवन, भोपाल-462004 (म.प्र.)

ई-मेल - [dpd.mp@nic.in](mailto:dpd.mp@nic.in)

फैक्स - 0755-2571678,

दूरभाष - 0755-2550353/ 2572313

वेबसाइट - [www.dpd.gov.in](http://www.dpd.gov.in)



इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड

राज्य कार्यालय-मध्यप्रदेश

ब्लाक-2, तृतीय तल, "पर्यावास", अरेरा हिल्स, भोपाल-462011

दूरभाष: 0755- 2555883, 4036202, 4036217

वेबसाइट : <http://www.iffco.in>, Email: [smm\\_bhopal@iffco.in](mailto:smm_bhopal@iffco.in)

मुद्रक : कृषक जगत प्रीटिंग वर्क्स, भोपाल, दूरभाष : 9826255861

# चना



सत्यमेव जयते

भारत सरकार

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग

दलहन विकास निदेशालय

छठी मंजिल, विन्ध्याचल भवन भोपाल - 462004 (म.प्र.)

सौजन्य से :



किसानों, कृषि एवं सहकारिता को समर्पित

गौरवमयी स्वर्ण जयंती वर्ष में

इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड

राज्य कार्यालय-मध्यप्रदेश

ब्लाक-2, तृतीय तल, "पर्यावास", अरेरा हिल्स, भोपाल-462011



स्वस्थ धरत, छेत हत



एक कदम स्वच्छता की ओर



Per Drop, More Crop

## चने की उन्नतशील खेती

भारत विश्व का सबसे बड़ा चना उत्पादक (कुल उत्पादन का 75 प्रतिशत) देश है। क्षेत्रफल एवं उत्पादन दोनों ही दृष्टि में दलहनी फसलों में चने का मुख्य स्थान है। समस्त उत्तर-मध्य व दक्षिण भारतीय राज्यों में चना रबी फसल के रूप में उगाया जाता है। चना उत्पादन की नई उन्नत तकनीक व उन्नतशील प्रजातियों का उपयोग कर किसान चने का उत्पादन बढ़ा सकते हैं तथा उच्चतम एवं वास्तविक उत्पादकता के अन्तर को कम कर सकते हैं।



### उपज अन्तर

सामान्यतः यह देखा गया है कि अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन की पैदावार व स्थानी किस्मों की उपज में 25: का अन्तर है। यह अन्तर कम करने के लिये अनुसंधान संस्थानों व कृषि विज्ञान केन्द्र की अनुशंसा के अनुसार उन्नत कृषि तकनीक को अपनाना चाहिए।

### जलवायु

चने के खेती प्रायः बारानी फसल के रूप में रबी मौसम की जाती है। चने खेती के लिए 60–90 सें.मी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त रहते हैं।

### भूमि एवं भूमि की तैयारी

हल्की दोमट से मटियार भूमि चने के लिए सर्वोत्तम रहती है किन्तु समुचित जल निकास का प्रबन्ध होने पर भारी भूमियों में भी इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। काबुली चने के लिये अधिक उपजाऊ भूमि कि आवश्यकता पड़ती है। जड़ ग्रन्थियों के उत्तम विकास हेतु मृदा में पर्याप्त वायु-संचार का होना अति आवश्यक है अतः यह ढेलेदार खेत को पसन्द करता है। रफ सीडबेड तैयार करने हेतु एक जुताई मिट्टी पलट हल से व एक से दो जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से पर्याप्त रहती है।

### बुआई समय

उत्तरी भारत – अंसिचित : अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़े , सिंचित : नवम्बर के प्रथम पखवाड़े (मध्य एवं दक्षिण भारत-अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े)। सिंचित : अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़े से नवम्बर के प्रथम पखवाड़ा।

### बीज की मात्रा

छोटे दाने वाली प्रजातियों के लिए 50–60 कि.ग्रा./हे. तथा बड़े दानों वाली प्रजातियों के लिए 100 कि.ग्रा. बीजदर व पछेती बुवाई के लिए 90–100 कि.ग्रा./हे. एवं काबुली किस्मों के लिये 100 से 125 किग्रा./हे. पर्याप्त रहती है।

### बुआई की विधि

अधिक उपज लेने हेतु बोआई कतारों में ही 30 से.मी. की दूरी पर व देर से 25 से.मी. की दूरी पर सीड ड्रिल द्वारा या हल के पीछे चोंगा बांधकर 8–10 से.मी. की गहराई पर करें।

### अन्तरवर्तीय फसल प्रणाली

चने की खेती अन्तरवर्तीय के रूप में निम्न फसलों के साथ करने से अधिक उत्पादन के परिणाम प्राप्त हुए हैं।

6 लाईन चना 4 लाईन गेहूँ 6 लाईन चना 2 लाईन सरसों

4 लाईन चना 2 लाईन जौ 4 लाईन चना 2 लाईन अलसी

प्रयोग द्वारा चना गेहूँ फसल प्रणाली सबसे अधिक लाभकारी सिद्ध हुआ है।

### बीजोपचार

**रोग नियंत्रण हेतु** : उकठा एवं जड़ सड़न रोग से फसल के बचाव हेतु 2 ग्राम थायरम + 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम के मिश्रण से प्रति किलो बीज या वीटावेक्स (कार्बोक्सिन) 2 ग्राम/किलो से उपचारित करें।

**कीट नियंत्रण हेतु** : थायोमेथोक्साम 70 डब्ल्यू पी. 3 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित करे।

### खाद एवं उर्वरक

मृदा परीक्षण के आधार पर समस्त उर्वरक अन्तिम जुताई के समय हल के पीछे चोंगा बांधकर या फर्टीसीड ड्रिल द्वारा कूड़ में बीज की सतह से 2 से.मी. गहराई व 5 से.मी. साइड में देना सर्वोत्तम रहता है। चना के लिए सामान्यतयः 15–20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50–60 कि.ग्रा. फास्फोरस, 20 कि.ग्रा. पोटाश एवं 20 कि.ग्रा. गंधक की आवश्यकता होती है। जिन क्षेत्रों में जस्ता की कमी हो वहाँ 15–20 कि.ग्रा. जिन्क सल्फेट प्रयोग करें। नाइट्रोजन एवं फास्फोरस की समस्त

राज्यवार प्रमुख प्रजातियों का विवरण		
राज्य	प्रजातियाँ	
	देशी	काबुली
आन्ध्रप्रदेश	फूले जी. 95311, आई.सी.सी.वी. 32 क्रांति.एम.एन.के. 1 के.पी.आई.सी.सी.वी. 37 फूले जी. 0517	आई सी.सी.वी. 2,कॉक-2
बिहार मध्यप्रदेश	जे.जी. 14, जे.जी. 226, जे.जी. 63, जे.जी. 130, जे.जी. 322, जे.जी. 218, जे.जी. 13, जे.जी. 11	राज विजय 202 एवं 201, जे.जी. के2, जे.जी.के. 3, जे.जी.के1, कॉक2
महाराष्ट्र	ए.के.जी. 9303–12, जाकी 9218, बी.डी. एन.जी. 797 (आकाश), दिग्विजय, डब्लू.सी.जी. 10, जे.जी. 16	पी.के.वी. काबुली 4, विराट, फूले जी. 0517, उज्जवल
पंजाब	जी.एन.जी. 1958, जी.एल.के. 28127, पी.बी.जी. 5,पूसा 547, जी.एन.जी. 469,	एल. 551, एल. 550
राजस्थान	उदय, पूसा 362,राजस आर.एस.जी. 974, आर.एस.जी. 902 (अरूणा), आर.एस.जी. 896 (अर्पण), आर.एस.जी. 991 (अर्पणा), आर.एस.जी. 807 (आमा), जी.एन.जी. 1488,जी. एन.जी. 421, प्रताप चना 1, आर.एस.जी.902 (अरूणा)	एल. 550.कॉक 2
उत्तरप्रदेश	जी.एन.जी. 1969, सी.एस.जे. 515, डब्लू.सी.जी. 3 (वल्लभ कलर चना), जी एन.जी. 1581, बी.डी.जी. 72, आर.एस.जी. 963 (आधार), सी.एस.जी. 8962, फुले जी 9925–9 (राजस)	पूसा 1003, कॉक 2, के 4,हरियाणा काबुली चना 2
उत्तराखंड	पंत काबुली 1	
झारखंड	के.डब्लू.आर. 108, के.पी.जी. 59, पंत जी. 114	एच. के. 05–169
छत्तीसगढ़	पूसा 391, पूसा 372, जे.एस.सी. 55, जे.एस.सी. 56, आर.जी. 2918 (वैभव)	जे.जी.के. 1, फूले जी. 0517
पश्चिम बंगाल तमिलनाडू	अनुराधा, गुजरात चना 4, उदय, एम.एन.के. 1, फुले जी. 95311,जे.जी.11	पूसा 1003, को. 4
स्त्रोत:- सीडनेट, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय , भारत सरकार एवं मा.द.अनु.सं.-भा.कृ.अनु.प., कानपुर।		

भूमियों में आवश्यकता होती है। किन्तु पोटाश एवं जिंक का प्रयोग मृदा पीरक्षण उपरान्त खेत में कमी होने पर ही करें। नत्रजन एवं फासफोरस की संयुक्त रूप से पूर्ति हेतु 100–150 किग्रा डाइ अमोनियम फास्फेट का प्रयोग करें।

### गौण एवं सूक्ष्म पोषक तत्व

**गंधक (सल्फर)** – काली एवं दोमट मृदाओं में 20 कि.ग्रा. गंधक (154 कि.ग्रा. जिप्सम/फॉस्फो-जिप्सम या 22 कि.ग्रा. बेन्टोनाइट सल्फर) प्रति हेक्टर की दर से बुवाई के समय प्रत्येक फसल के लिये देना पर्याप्त होगा। कमी ज्ञात होने पर लाल बलुई मृदाओं हेतु 40 कि.ग्रा. गंधक (300 कि.ग्रा. जिप्सम/फॉस्फो-जिप्सम या 44 कि.ग्रा. बेन्टोनाइट सल्फर) प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए।

**जिंक** – जिंक की मात्रा का निर्धारण मृदा के प्रकार एवं उसकी उपलब्धता के अनुसार की जानी चाहिए।

- काली मृदा**– 2.0 कि.ग्रा. जिंक (10 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट हेप्टा हाइड्रेट या 6.0 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट मोनो हाइड्रेट) प्रति हेक्टर की दर से आधार उर्वरक के रूप में प्रयोग करना चाहिए।
- बलुई दोमट मृदा**– 2.5 कि.ग्रा. जिंक (12.5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट हेप्टा हाइड्रेट या 7.5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट मोनो हाइड्रेट) प्रति हेक्टर की दर से आधार उर्वरक के रूप में प्रयोग करन चाहिए।
- लैटेराइटिक,जलोढ़ एवं मध्यम मृदा**– 2.5 कि.ग्रा. जिंक (12.5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट हेप्टा हाइड्रेट या 7.5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट मोनो हाइड्रेट) के साथ 200 कि.ग्रा. गोबर की खाद का

प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए।

**बोरॉन** : काली व दोमट मृदाओं में चने की फसल में बुवाई के पूर्व 1 कि.ग्रा. बोरॉन (10 कि.ग्रा. बोरेक्स या 7 कि.ग्रा. डाइसोडियम टेट्राबोरेट पेन्टाहाइड्रेट) प्रति हेक्टर की दर से देना चाहिए। जबकि बलुई दोमट पहाडी क्षेत्र की मृदाओं में जिनमें कार्बनिक पदार्थ की मात्रा कम हो उनमें 1.5 कि.ग्रा. बोरॉन (15 कि.ग्रा. बोरेक्स या 10 कि.ग्रा. डाइसोडियम टेट्राबोरेट पेन्टाहाइड्रेट) प्रति हेक्टर बुवाई के पूर्व मृदा में देना चाहिए।

**मॉलिब्डेनम**– 0.5 कि.ग्रा. सोडियम मॉलिब्डेट प्रति हेक्टर की दर से आधार उर्वरक के रूप में या 0.1: सोडियम मॉलिब्डेट के घोल का दो बार पर्णीय छिड़काव करना चाहिए अथवा मॉलिब्डेनम के घोल में बीज शोषित करें। ध्यान रहे कि अमोनियम मॉलिब्डेनम का प्रयोग तभी किया जाना चाहिए जब मृदा में मॉलिब्डेनम तत्व की कमी हो।

### खरपतवार नियंत्रण

पेन्डीमिथालीन 30 ई.सी. दवा 2.5–3 ली. (0.75–1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व) /हेक्टेयर की दर से 400–500 ली. पानी में घोलकर बुवाई के 48 घन्टे के अंदर छिड़काव करना चाहिए। बोआई के 25–30 दिन बाद एक निराई-गुड़ाई करने से खरपतवार नियन्त्रण के साथ मृदा में वायुसंचार भी बढ़ता है।

### सिंचाई

भारी व चिकनी भूमि को छोड़कर अन्य भूमियों में दो सिंचाई, प्रथम सिंचाई शाखाएँ बनते समय व द्वितीय फलियों में दाना बनते समय करें। किसी भी दशा में सिंचाई बुआई चार सप्ताह तक नहीं करनी चाहिए ( सिंचाई फूल आने के समय ना करे )।

**कीट नियन्त्रण:** कटुआ और फलीबेधक चने के मुख्य शत्रु हैं।

### फली छेदक या इल्ली या गिडार

यह पौधे को फली रहित कर (हरित अवस्था में) देता है। तथा दाना बनते समय फली में छेद कर विकसित दाने को पूरी तरह खा जाता है। पौधों में पूर्ण वानस्पतिक वृद्धि होने पर पौधों की शाखा, पत्ती की डण्ठल, पत्तियों तथा फूलों पर भूरे रंग के निर्जीव धब्बे दिखाई देते हैं। शाखाएँ तथा तना भी प्रभावित होता है तथा अंत में दाना टूट जाता है।



**नियंत्रण** : एन.पी.व्ही. का 250 गिडार समतुल्य 400–500 लीटर पानी में घोल बनाकर का प्रयोग करें अथवा इण्डोक्साकार्ब 1 मि.ली/लीटर या इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 एस.जी. 0.2 ग्राम/ली या प्रोफेनोफॉस 2 मि.ली. /लीटर पानी के घोल की दर से छिड़काव करें।

### कटुआ

दिन में ढेलों के बीच छुपा रहता है। रात को पौधे को जमीन के स्तर से काटकर नुकसान पहुँचाता है। खाता कम बिगाड़ता ज्यादा है।



**नियंत्रण** : एकीकृत नियन्त्रण हेतु ग्रीष्मकालीन जुताई, फसल चक्र व फिर भी आवश्यकता होने पर डेल्टामेथिन 2.8 ई.सी. 750 मि.ली./हेक्ट. या क्विनालफॉस 25 ई.सी. 1 ली./हेक्ट. की दर से छिड़काव करना चाहिए। इसके नियंत्रण हेतु फोरेट 10 जी बुवाई पूर्व 10 कि.ग्रा./हे. की दर से मिट्टी में मिलायें।

### रोग नियन्त्रण

उकठा रोग, ग्रे-मोल्ड एवं झुलसा (एसकोकाइट्टा ब्लाइट), स्कलेरोटीनिया ब्लाइट प्रमुख बीमारियाँ हैं। एकीकृत ब्याधि नियन्त्रण विधि इस प्रकार है।

### उकठा रोग के लक्षण

रोगी पौधो की बढवार रुक जाती है। पत्तियों पीली पड़ जाती है, तने के लम्बवत् चिरान में तंबाकू के रंग की धाराएं दिखाई पडती है। जड़े काली पड़ जाती हैं व बाद में पौधे सूख जाते है।



**नियंत्रण** : देर से बोनी करे, गहरी बुवाई (8–10 से.मी.) व अधिक प्रभावित क्षेत्रों में 3–4 वर्षीय फसल चक्र का प्रयोग करे व उकठा अवरोधी प्रजातियाँ जैसे अवरोधी, विजय (फूले.जी. 81–1), प्रगति (के- 3256), भारती, वरदान (जी.एन.जी. 663), क्रांति, स्वेता, पूसा-372, विराट, वैभव (आर.जी.-2918), जे.जी.-315 का प्रयोग करने से बचा जा सकता है। बुवाई से पूर्व बीज को फफूँदनाशी दवा थायरम 2 ग्रा एव 1 ग्रा. कार्बेन्डाजिम से प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचार करके बोना चाहिए या जैविक फफूँदनाशी ट्राईकोडर्मा विरिडी 4